5-16
झूठे उपदेशकों की भर्त्सना

पतरस के समान (2 पतरस 3:1), यहूदा ने भी समझा कि उसके उत्तरदायित्व का एक भाग है अपने पाठकों को स्मरण के लिए कुछ देना। यहूदा और उसके पाठक जिन "भक्तिहीन" मनुष्यों को जानते थे, अनैतिकता के द्वारा परमेश्वर के लोगों को भ्रष्ट करने वाले वे पहले नहीं थे। बीते समय में परमेश्वर ने न्याय किया था; वह पुनः न्याय करेगा। उसके पाठकों को आवश्यकता थी कि उनके मन उन के प्रति परमेश्वर के व्यवहार के इतिहास के बारे में ताज़ा किए जाएं, जो परमेश्वर से विमुख हो गए थे।

ई. अर्ल एलिस ने तर्क दिया है कि संपूर्ण यहूदा 5-19 विशिष्ट यहूदी व्याख्या तकनीक (मिद्राशिक) द्वारा सावधानी से गठा गया तर्क है।[1] मृत सागर चर्मपत्रों और अन्य स्थानों से इसके समानन्तर हैं। यहूदा चाहता था कि उसके पाठक समझें कि, झूठे उपदेशक, बिना अपनी किसी योजना के, परमेश्वर के दासों द्वारा बहुत पहले से कही गई भविष्यद्वाणियों को पूरा कर रहे थे। एलिस का तर्क है कि हमें यहूदा के शब्दों को उसके विरोधियों के विरुद्ध निर्देशित किए गए बेबुनियाद उत्तेजनापूर्ण भाषण जैसे नहीं देखना चाहिए।

अनाज्ञाकारियों पर परमेश्वर का दोषारोपण (5-7)

5पर यद्यपि तुम सब बात एक बार जान चुके हो, तौभी मैं तुम्हें इस बात की सुधि दिलाना चाहता हूं, कि प्रभु ने एक कुल को मिस्र देश से छुड़ाने के बाद विश्वास न लाने वालों को नाश कर दिया। 6फिर जिन स्वर्गदूतों ने अपने पद को स्थिर न रखा वरन अपने निज निवास को छोड़ दिया, उसने उन को भी उस भीषण दिन के न्याय के लिये अन्धकार में जो सदा काल के लिये है बन्धनों में रखा है। 7जिस रीति से सदोम और अमोरा और उन के आस पास के नगर, जो इन के समान व्यभिचारी हो गए थे और पराये शरीर के पीछे लग गए थे आग के अनन्त दण्ड में पड़ कर दृष्टान्त ठहरे हैं।

आयत 5. यहूदा ने परमेश्वर के न्याय किए जाने के तीन उदाहरणों के साथ आरंभ किया। ये उदाहरण यहूदा के प्रथम पाठकों के लिए स्मरण करवाने के लिए थे कि उनके मध्य के झूठे उपदेशकों का भी परमेश्वर वैसे ही न्याय करेगा जैसे उसने उनका किया था जिन्होंने उसके विरुद्ध विद्रोह किया था। दोनों ही प्रकार से, जैसा कि यहूदा ने लिखा और जैसा आयत 5 से 7 में उसका विषय था,

2 पतरस 2:4-7 के साथ स्पष्ट समानन्तर हैं। दोनों ही पुराने नियम के उदाहरणों द्वारा चेतावनी देते हैं। दो बार वे एक ही उदाहरण का उपयोग करते हैं। यहूदा 2 पतरस से केवल इस बात में भिन्न है कि उसने परमेश्वर द्वारा इस्राएल का, जब वे मिस्र से निकलने के पश्चात उसके अनाज्ञाकारी रहे थे, तब न्याय करने का उदाहरण प्रयोग किया। पतरस ने नूह के दिनों में परमेश्वर के न्याय का उल्लेख करना पसन्द किया। यहूदा के उदाहरण मिस्र से निकलकर आने वाले अविश्वासी इस्राएलियों, स्वर्गदूतों, और सदोम तथा अमोरा हैं। पतरस के उदाहरण स्वर्गदूत, नूह के दिनों के अनाज्ञाकारी लोग, और सदोम तथा अमोरा हैं।

यहूदा और पतरस द्वारा प्रयुक्त उदाहरण बिलकुल एक समान नहीं हैं। हमें पूछना होगा कि ये भिन्नताएं क्या हमें पत्रियों की महत्वपूर्णता के विषय कुछ बताती हैं। यदि यह सच है, जैसा कि लगभग निश्चित है, कि एक लेखक ने दूसरे की पत्री का प्रयोग किया है, तो दूसरे लेखक ने एक उदाहरण के बदले दूसरे को प्रति स्थापित क्यों किया? क्यों न एक चौथा उदाहरण जोड़ दिया गया? क्या प्रति स्थापन में ऐसा कुछ है जो इसका संकेत दे कि किस लेखक ने पहले लिखा? क्या इसमें ऐसा कुछ है जो हमें लिखे जाने के समय के और जिन पाठकों को लिखा गया उनके बारे में कुछ बताए?

हमें सतर्क रहना होगा, परन्तु यदि यहूदा मुख्यतः यहूदी मसीही श्रोताओं को लिख रहा था, तो उसने चाहा होगा कि उसके पाठक उन घटनाओं से सीखें जो यहूदी इतिहास की रचना के समय में हुईं थीं। उसने अविश्वासी यहूदियों का उदाहरण इसी कारण लिया होगा। पतरस ने, यहूदियों की अनाज्ञाकारिता से कम सरोकार रखते हुए, वे उदाहरण चुने होंगे जो अधिक व्यापक रीति से श्रोताओं में गूँजते हैं। नूह के समय की अनाज्ञाकारिता ऐसे समय से लिया गया उदाहरण है जो मनुष्य परिवार के विश्वव्यापी अनुभव से लिया गया है, न कि यहूदियों के राष्ट्रीय इतिहास से।

पतरस ने यहूदा द्वारा प्रयुक्त अविश्वासी इस्राएलियों के उदाहरण को संभवतः इसलिए छोड़ दिया क्योंकि वह उस लगने वाली ठोकर के प्रति संवेदनशील था जो उसके यहूदी पाठकों को लग सकती थी। परन्तु फिर भी, अन्ततः ऐसा कोई स्पष्ट कारण नहीं है कि क्यों यहूदा ने अविश्वासी इस्राएलियों का और पतरस ने नूह के दिनों के अविश्वासी लोगों के उदाहरण को लिया। इस प्रति स्थापना से हम किसी छिपे हुए सन्देश का अनुमान नहीं लगा सकते हैं। न ही इससे हम इन पत्रियों के लिखे जाने के क्रम का कोई स्पष्ट अनुमान लगा सकते हैं, और न ही उनके यथाक्रम श्रोताओं का। हो सकता है कि प्रति स्थापना का कोई महत्व था, परन्तु यह ऐसा महत्व है जो वर्तमान पाठक पर प्रगट नहीं है।

यहूदा ने, **जो मिस्र देश से छुड़ाए** जाने के बाद **नाश कर दिए** गए, उनके अविश्वासी बर्ताव का उल्लेख सामान्य रीति से उन पर दोषारोपण के लिए किया। दूसरी ओर, उसके मन में कोई विशेष घटना हो सकती थी, जैसे कि टोह लेने वालों द्वारा दिए गए कनान के विवरण को लेकर कुड़कुड़ाना (गिनती 14)। प्रभु में उनके अविश्वास का दण्ड देने के लिए, परमेश्वर ने इस्राएलियों के लिए

चालीस वर्ष तक जंगल में यात्रा करना नियुक्त कर दिया। इस्त्राएल का विद्रोह जिससे परमेश्वर का दण्ड आया यहूदा के पाठकों के लिए चेतावनी था। उन्हें मसीह की आशिषों को हल्के में नहीं लेना था। यद्यपि उन्हें परमेश्वर के लोग कहा गया, झूठे उपदेशकों की सुनने के कारण उन पर परमेश्वर का दण्ड पड़ेगा। पौलुस ने लगभग ऐसा ही पाठ 1 कुरिन्थियों 10:6-13 में सिखाया।

दोनों यहूदा और पतरस ने यह स्पष्ट किया कि वे पाठकों को उन बातों का स्मरण करवा रहे थे जो उन्होंने उन प्रेरित शिक्षकों से सुनीं थीं जो उन तक सुसमाचार सन्देश लेकर आए थे (2 पतरस 1:12, 13; 3:1)। पाठकों को उसी बात पर वापस लाना था जो उन्होंने आरंभ में सुनी थी। जो उन्होंने प्रेरितों से सुना और जो उन्हें झूठे उपदेशकों ने सिखाया उसके मध्य कोई साझा स्थान नहीं था।

यहूदा ने रूप/प्रतिरूप व्याख्या शैली का प्रयोग किया। जंगल में इस्त्राएली रूप थे; परन्तु प्रतिरूप कौन थे? उसका दावा था कि जंगल में इस्त्राएल और जो दण्ड परमेश्वर उन पर लाया वह एक नमूना था कि उन झूठे उपदेशकों के साथ क्या होगा जो उन कलीसियाओं को परेशान कर रहे थे जिन्हें वह संबोधित कर रहा था। तो क्या ये झूठे उपदेशक उन इस्त्राएलियों के समान थे जो विश्वास नहीं लाए? यदि ऐसा है तो, यहूदा का तात्पर्य था कि परमेश्वर से विमुख होने से पहले, झूठे उपदेशक मसीही समाज के विश्वासयोग्य सदस्य थे। उनका नया जन्म हुआ था। उन्होंने मसीह को पहन लिया था और परमेश्वर के राज्य के भागी थे। यहूदा का अपने पाठकों को समझाने का विषय था, कि झूठे उपदेशक कभी उनका भाग थे, उनका सत्य से फिर जाना परमेश्वर की सार्वभौमिक सत्ता के प्रयोजन में था। आरंभ से ही उसकी योजना में इस बात कि गुंजाइश रखी गई थी कि मसीहियों में से ही भक्तिहीन लोग निकल कर आएंगे और संसार की ओर मुड़ जाएंगे।

यहूदा ने जैसा लिखा, वैसा लिखने का एक और कारण था कि वह अपने पाठकों को चेतावनी देना चाहता था। वह उन्हें कहना चाहता था कि परमेश्वर के साथ अपने संबंध के विषय वे आत्म संतुष्ट न हों। बीते समय में, चुने हुए इस्त्राएल से लोग मूर्तियों की ओर मुड़ गए थे, उन्होंने परमेश्वर पर सन्देह किया, और जंगल में अविश्वास की ओर झुक गए। जब ऐसा हुआ, परमेश्वर ने दण्ड की अग्नि उन पर भेजी। यदि वे, यहूदा के पाठक, झूठे उपदेशकों के मार्ग पर चलेंगे तो उनका भी वही परिणाम होगा। क्योंकि यहूदा एक अनुस्मरण और चेतावनी दे रहा था, संभव था कि वह अपने पाठकों को समझाना चाहता था कि वे बलवा करने वाले इस्त्राएल के प्रतिकूल-प्रकार हैं। वे इस्त्राएल के पदचिन्हों का अनुसरण करने की संभावना रखते हैं। यदि उन्होंने वैसा किया, तो जैसे परमेश्वर ने उन्हें बाद में नाश कर दिया जिन्हें उसने बुलाया था, उसी प्रकार उन पर भी उसका न्याय आ जाएगा।

आयत 6. यहूदा ने एक दूसरे उदाहरण से निवेदन किया। उसने अपने पाठकों को, पाप करने वाले स्वर्गदूतों के परमेश्वर के प्रकोप का सामना करने के

द्वारा चित्रित किया कि यदि वे उससे विमुख हो जाएंगे तो परमेश्वर अपने सन्तों का न्याय करेगा। पतरस ने भी इसी उदाहरण का उपयोग किया (2 पतरस 2:4), परन्तु स्वर्गदूतों पर परमेश्वर के न्याय का उसने यहूदा से कुछ अधिक ब्यौरा दिया। प्रत्यक्षतः, दोनों पतरस और यहूदा को लगता था कि उनके पाठक स्वर्गदूतों पर परमेश्वर के न्याय के बारे में पहले से जानते हैं। किसी भी लेखक को इसे और अधिक समझाने की आवश्यकता नहीं लगी। परन्तु यह विचार का विषय है कि न तो नया नियम और न ही पुराना नियम उस समय को सटीक बताता है जब परमेश्वर ने स्वर्गदूतों का न्याय किया।

नए नियम के समय तक आने के काल में यहूदियों में स्वर्गदूतों के बारे में बहुत कल्पनाएं थीं। वे अधिकांशतः उत्पत्ति 6:1-4 में "परमेश्वर के पुत्रों" पर जो "मनुष्य की पुत्रियों" के पास गए की घटना पर केंद्रित होती थीं। कुछ कल्पनाएं पुराने और नए नियम के बीच के समय में हनोक के नाम के अन्तर्गत लिखी गई कृति (देखें उत्पत्ति 5:21-24) में पाई जाती हैं। पहला हनोक एक सहभागी कृति है जिसे चरणों में लिखा गया। इसके आरंभिक भाग की तिथि नए नियम के लगभग एक शताब्दी पूर्व की प्रतीत होती है, जबकि इसके बाद के भागों की तिथि मसीही काल की प्रथम शताब्दी में काफी आगे तक की लगती है। यह कि यहूदा के पाठक 1 हनोक को जानते थे इस बात से स्पष्ट है कि उसने आगे चलकर अपनी पत्री में इसमें से उद्धृत किया है।[2]

यह जानना कठिन है कि क्या यहूदा स्वर्गदूतों पर परमेश्वर के न्याय को एक ऐसी घटना के रूप में समझाना चाहता जो वास्तविक समय में हुई थी। जैसा अच्छा शिक्षक वह था, हो सकता है कि यहूदा लोकप्रिय कहानियों और मिथकों के उल्लेख के द्वारा परमेश्वर के सत्य का चित्रण कर रहा हो कि परमेश्वर उनका भी न्याय करता है जो उसके निकट होते हैं। उसका मुद्दा था कि किसी को भी परमेश्वर की भलाई को न तो नगण्य समझना चाहिए और न ही उसके बारे में अनुमान लगाने चाहिएं। धर्म के त्याग का खतरा वास्तविक था। यहूदा द्वारा पाप करने वाले स्वर्गदूतों का उल्लेख करना काफी सीमा तक उसी प्रकार था जैसे एक आधुनिक प्रचारक किसी समकालिक लेखक को कोई बात समझाने के लिए करेगा। ऐसे में न तो यहूदा का और न ही आधुनिक प्रचारक का यह तात्पर्य है कि ये घटनाएं वास्तविक समय में हुई थीं।

यद्यपि इस संभावना को कि यहूदा काल्पनिक कहानियों को लेकर चल रहा था बर्खास्त नहीं किया जा सकता है, यह विचारणीय है कि स्वर्गदूतों का उल्लेख उन कहानियों के मध्य आता है जो ऐतिहासिक हैं। यदि यहूदा ने विधर्मी इस्त्राएलियों की कहानी तथा सदोम और अमोरा की कहानी को वास्तविक समय में घटित कहानी के समान लिया, तो यह मानने का कोई कारण नहीं है कि उसने परमेश्वर द्वारा स्वर्गदूतों के न्याय को उनसे भिन्न लिया था। इसके अतिरिक्त, वह स्वर्गदूतों द्वारा किए गए उल्लंघन के स्वरूप के बारे में बहुत विशिष्ट था। उन्होंने अपने पद को स्थिर न रखा। स्वर्गदूत परमेश्वर के सन्देश वाहक हैं; वे उसके निकट रहते हैं। संभवतः यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि स्वर्गदूत परमेश्वर

के अति निकट सहयोगी हैं। जिन स्वर्गदूतों के बारे में चर्चा हो रही है उनका विशिष्ट स्थान था, परन्तु फिर भी वे अपने निज निवास से सन्तुष्ट नहीं थे। तात्पर्य यह लगता है कि स्वर्गदूतों ने, अदन की वाटिका के पुरुष और स्त्री के समान (उत्पत्ति 3:5), परमेश्वर के समान होने की अभिलाषा रखी। मनुष्यों तथा स्वर्गदूतों के पाप का स्त्रोत घमंड ही लगता है।

स्वर्गदूतों का यह बलवा कब हुआ? क्या परिस्थितियाँ थीं? बाइबल कुछ नहीं बताती है। फिर भी, बाइबल का मौन होना, अनुमानों को दबा नही पाया है। यह लगभग शास्त्र-सम्मत धर्म-मत हो गया है कि शैतान पाप करने वाले स्वर्गदूतों में से एक था, वास्तव में उनका नेता था। यहूदा ने शैतान के विषय में कुछ नहीं कहा। न तो यहूदा में और न ही किसी अन्य स्थान पर शैतान के उद्गम से संबंधित कोई शिक्षा है। हो सकता है कि वह ऐसा स्वर्गदूत हो जो अपने निज निवास से असंतुष्ट हो; परन्तु यदि शैतान यहूदा की विषय-वस्तु है, तो यह विचित्र है कि परमेश्वर ने **[उन को] भी उस भीषण दिन के न्याय के लिये अन्धकार में जो सदा काल के लिये है बन्धनों में रखा है**। शैतान बन्धनों में नहीं दिखता है। जिस संसार में विश्वासी रहते हैं वह उसमें बहुत सक्रिय और सामर्थी दिखाई देता है।

शैतान के आरंभ और स्वर्गदूतों के कार्यों में रुचि के कारण हमें यहूदा के केंद्र बिन्दु को दृष्टिगोचर नहीं कर देना चाहिए। वह अपने पाठकों को स्मरण दिला रहा था कि स्वर्गदूत भी, जो परमेश्वर के बहुत निकट थे, जब उन्होंने पाप किया (वह चाहे जो भी था और परिस्थितियाँ जैसी भी थीं), तो परमेश्वर ने उनका न्याय किया। यदि परमेश्वर ने पाप करने वाले स्वर्गदूतों को "सदा काल के बन्धनों में रखा है", तो किसी को सन्देह नहीं होना चाहिए कि वह मसीहियों को भी "उस भीषण दिन के न्याय के लिये" रखेगा यदि वे उससे विमुख हो जाएंगे। यहूदा अपने पाठकों को विधर्मी होने के खतरों से सचेत कर रहा था।

अंधियारी अग्नि की कल्पना करना कठिन है परन्तु यीशु ने दुष्टों पर परमेश्वर के न्याय को अंधकार (मत्ती 8:12; 25:30) और अग्नि को आलंकारिक (मत्ती 5:22; 13:42) रूप में प्रयोग किया। यहूदा ने पाप करने वाले स्वर्गदूतों पर परमेश्वर के न्याय की तीव्रता पर यह कहने के द्वारा बल दिया कि उनके बन्धन "सदा काल" के थे और वे "अन्धकार में" हैं। तात्पर्य है कि, यदि परमेश्वर ने स्वर्गदूतों का न्याय कठोरता से किया तो निश्चय ही वह उन भक्तिहीन उपदेशकों का भी, जिनका सामना यहूदा ने किया, न्याय करेगा। उनका न्याय कम से कम उतना तीव्र तो होगा जितना स्वर्गदूतों का था।

आयत 7. सदोम और अमोरा पर परमेश्वर के न्याय का वर्णन उत्पत्ति 19 में दिया गया है। उन नगरों का विनाश, रिचर्ड जे. बॉकहैम के शब्दों में, "ईश्वरीय न्याय का प्रतिमान उदाहरण"[3] है। बाइबल में उन नगरों को केवल नकारात्मक रूप में ही दिखाया गया है (उदाहरण स्वरूप, देखें, व्यवस्थाविवरण 29:23; यशायाह 1:9; यिर्मयाह 23:14; मत्ती 10:15)। यहूदा ने उत्पत्ति 19:24, 25 का अनुसरण करते हुए संकेत दिया कि न केवल यह दोनों नगर परमेश्वर के न्याय

के नीचे आए, वरन उन के आस पास के नगर भी आए। व्यवस्थाविवरण 29:23 इनमें से दो नगरों का नाम अदमा और सबोयीम बताता है (देखें होशे 11:8)। एक और नगर सोअर, लूत के आग्रह के कारण बच गया (उत्पत्ति 19:19-22)।

"सदोम और अमोरा" के स्थान का पता नहीं है, परन्तु यहूदी मान्यता के अनुसार, ये नगर उस घाटी के दक्षिणी छोर पर थे जो अब मृत सागर से ढकी है। वर्तमान काल में इस इलाके में स्थित गर्म पानी के सोतों और खनिज भण्डारों के कारण बहुत सैलानी आते हैं। मिस्र के सिकन्दरिया में एक यहूदी लेखक ने, मसीह के जन्म से थोड़ा ही समय पहले, उसके विश्वास के अनुसार, सदोम और अमोरा पर परमेश्वर के न्याय के परिणाम का विवरण दिया। उसका कहना था कि वह भूमि सदा के लिए दूषित हो गई है। उसके शब्द यह हैं: "उनकी दुष्टता के प्रमाण अभी भी शेष हैं: एक अविरल धुआँ देती मरुभूमि, पौधे जिनके फल कभी पकते नहीं, और नमक का एक खंबा जो एक अविश्वासी आत्मा का स्मारक है।"[4] ये शब्द मृतक सागर के दक्षिण की ओर के इलाके का उचित प्रतिरूप हैं। संक्षेप में, इस काल में लूत और अब्राहम के बारे में जो थोड़ा सा हम जानते हैं उससे उन नगरों का उनके पारंपरिक स्थान पर होना संभव लगता है, परन्तु इससे अधिक का दावा करना अनिश्चित होगा।[5]

इससे पहले के दोनों उदाहरणों (जंगल में इस्राएली और स्वर्गदूत) के विपरीत, सदोम के निवासी परमेश्वर के साथ के किसी आशीषित संबंध से नहीं गिरे थे। यहूदा ने सदोम और अमोरा का ध्यान केवल यह चेतावनी देने के लिए दिलाया कि कामुक लत का परिणाम भी परमेश्वर का प्रकोप होता है, **आग के अनन्त दण्ड**। उसने सदोम के पुरुषों पर **पराये शरीर** (σαρκὸς ἑτέρας, *सरकोस हेटेरस)* के पीछे लगने का आरोप लगाया, जिसका शब्दार्थ अनुवाद "अन्य शरीर" अथवा "भिन्न शरीर" भी हो सकता है। इस वाक्यांश की व्याख्या कम से कम दो प्रकार से हो सकती है। प्रथम, जो दो अपरिचित व्यक्ति सदोम गए और लूत के अतिथि बन गए, वे वास्तव में स्वर्गदूत थे। यहूदा ने अभी पिछली आयत में पाप करने वाले स्वर्गदूतों का उल्लेख किया था। संभवतः सदोम के पुरुष "पराए शरीर" के पीछे लग गए अर्थात उन्होंने स्वर्गदूतों के साथ यौन संबंध बनाने का प्रयास किया।[6] यह एक संभावित अर्थ है, परन्तु उपयुक्त नहीं।

दूसरा, सदोम के पुरुष समलैंगिक थे। यह अधिक उपयुक्त अर्थ है। "पराए शरीर" का अर्थ है पुरुष अन्य पुरुषों के साथ यौन संबंध रखना चाह रहे थे। प्रत्यक्षतः सदोम के पुरुषों को यह आभास भी नहीं था कि लूत के अतिथि स्वर्गदूत थे। लूत के घर में आने वाले अतिथियों से सदोम के पुरुषों ने यौन संबंध इसलिए बनाने चाहे क्योंकि वे पुरुष थे, इसलिए नहीं क्योंकि वे स्वर्गदूत थे। जो यौन भावना परमेश्वर ने मनुष्यों में रखी थी उसे सदोम के लोगों ने बिगाड़ दिया था।

इसे यदि समर्पण और विवाह के संदर्भ में देखें, मानवीय यौन प्रवृत्ति परमेश्वर द्वारा अपनी सृष्टि को दिया गया अच्छा उपहार है। परन्तु पुरुषों द्वारा अन्य पुरुषों के साथ यौन संबंध बनाने की चाह रखना "पराए शरीर" की चाह रखना है। यह सृष्टि के नियमों के विरुद्ध है। इसीलिए यहूदा ने वह भाषा प्रयोग

की जो उसने की।

उत्पत्ति 19 की कहानी में गिबा के पुरुषों (न्यायियों 19) की कहानी के साथ कई साझा बिन्दु हैं। इससे विपरीत दावों के होते हुए भी, समलैंगिकता की, दोनों पुराने (लैव्यव्यवस्था 20:13) और नए नियम (रोमियों 1:26, 27; 1 कुरिन्थियों 6:9) में निश्चित रीति से भर्त्सना की गई है। सदोम के पुरुष न केवल अपने यौन विकृति के कारण परमेश्वर के विरुद्ध पाप करने के दोषी थे, वरन वे हिंसक प्रवृत्ति के भी थे। वे लूत ही के घर में उन अपरिचितों के साथ बलात्कार करना चाहते थे। यहूदा ने हिंसक व्यवहार का कोई उल्लेख नहीं किया। उसने सदोमियों की व्यभिचारी होने पर ध्यान केंद्रित किया। अपने अनैतिक आचरण में सदोम के पुरुष उन झूठे उपदेशकों के समान थे जिनका यहूदा ने सामना किया।

वाक्यांश इनके समान ही में कुछ कठिनाइयाँ हैं क्योंकि सर्वनाम “इनके” (τούτοις, *टूतोइस)* का पूर्ववर्ती अस्पष्ट है। “इनके” किन को संबोधित करता है? क्या यह सदोम और अमोरा नगरों का व्यक्तित्व करण है? यदि ऐसा था तो हमारी अपेक्षा सर्वनाम के स्त्रीलिंग में होने की होती। यूनानी में “शहर” स्त्रीलिंग है, परन्तु सर्वनाम “इनके” वाक्यांश में पुलिंग है। वाक्य की यूनानी व्याकरण के अनुसार “इन के समान” को सदोम और अमोरा नगरों के साथ संबंधित देखना कठिन है।

तो फिर क्या “इन के समान” पिछली आयत के स्वर्गदूतों का उल्लेख है? यदि यह सत्य होता तो यहूदा कह रहा होता की आयत 6 के जिन “स्वर्गदूतों ने अपने पद को स्थिर न रखा” वे व्यभिचार के तथा “पराए शरीर” के पीछे जाने के दोषी थे। यह एक संभावना है यदि यहूदा 6 के स्वर्गदूत वे “परमेश्वर के पुत्र” हैं जिन्होंने उत्पत्ति 6:1, 2 में “मनुष्य की पुत्रियों” से विवाह किया। उत्पत्ति 6 के “परमेश्वर के पुत्र” प्रत्यक्षतः यौन पापों के दोषी थे। परन्तु यदि यहूदा का यही अर्थ था तो उसकी अपेक्षा थी की उसके पाठक बुद्धिमता सहित भाषा की बारीकियों के प्रति संवेदनशील होंगे। उत्पत्ति 6 इन “परमेश्वर के पुत्रों” को परमेश्वर द्वारा दिए गए किसी दण्ड के विषय कुछ नहीं कहता है, उनके “सदा काल के बन्धनों” में डाले जाने की तो छोड़ ही दें।

यदि “इन के समान” सदोम और अमोरा नगरों के लिए नहीं है और न ही आयात 6 के स्वर्गदूतों के लिए है, तो एकमात्र अन्य संभावना है की वह उन “भक्तिहीन मनुष्यों” के लिए है जिनका परिचय यहूदा 4 में आरंभ हुआ। यहूदा के शब्दों को समझने का यही सर्वोत्तम मार्ग है। तो फिर तात्पर्य यह हुआ: “वे (सदोम के पुरुष), उसी प्रकार जैसे की ये (झूठे उपदेशक), घोर अनैतिकता में लिप्त थे।”

झूठे उपदेशकों का एक विवरण (8-13)

8उसी रीति से ये स्वप्नदर्शी भी अपने-अपने शरीर को अशुद्ध करते, और प्रभुता को तुच्छ जानते हैं; और ऊंचे पद वालों को बुरा भला कहते हैं। 9परन्तु

प्रधान स्वर्गदूत मीकाईल ने, जब शैतान से मूसा के शव के विषय में वाद-विवाद किया, तो उसको बुरा भला कहके दोष लगाने का साहस न किया; पर यह कहा, "प्रभु तुझे डांटे।" [10]पर ये लोग जिन बातों को नहीं जानते, उन को बुरा-भला कहते हैं; और जिन बातों को अचेतन पशुओं के समान स्वभाव ही से जानते हैं, उन में अपने आप को नाश करते हैं। [11]उन पर हाय! क्योंकि वे कैन की सी चाल चले, और मजदूरी के लिये बिलाम के समान भ्रष्ट हो गए हैं: और कोरह के समान विरोध कर के नष्ट हुए हैं। [12]ये तुम्हारी प्रेम सभाओं में तुम्हारे साथ खाते-पीते, समुद्र में छिपी हुई चट्टान सरीखे हैं, और बेधड़क अपना ही पेट भरने वाले रखवाले हैं; वे निर्जल बादल हैं; जिन्हें हवा उड़ा ले जाती है; पतझड़ के निष्फल पेड़ हैं, जो दो बार मर चुके हैं; और जड़ से उखड़ गए हैं। [13]ये समुद्र के प्रचण्ड हिलकोरे हैं, जो अपनी लज्जा का फेन उछालते हैं: ये डांवांडोल तारे हैं, जिन के लिये सदा काल तक घोर अन्धकार रखा गया है।

पुराने नियम के उदाहरणों तथा नए एवं पुराने नियम के मध्य के समय के यहूदी लेखों के आधार पर, यहूदा ने इन झूठे उपदेशकों की भर्त्सना ज़ारी रखी। वे घमण्डी थे। आत्मिक अधिकारियों के लिए उनमें कोई आदर नहीं था। वे अज्ञानी थे और सुधार के प्रति उदासीन। वे विवेकशील मनुष्यों की अपेक्षा अचेतन पशुओं सरीखे थे। संभवतः यहूदा जिन के बारे में विचार कर रहा था उनमें आत्मिक बातों के लिए कोई समझ या गहराई नहीं थी। यहूदा उनके द्वारा दी जाने वाली शिक्षाओं में कम, परन्तु उनकी शिक्षाओं के परिणामों में अधिक रुचि रखता था। जो वे सिखाते थे उसकी अपेक्षा उनके भक्तिहीन व्यवहार और उनके द्वारा ऐसे व्यवहार की प्रशस्ति यहूदा को विचलित करती थी। अंततः, वे जिस बात की प्रतिज्ञा करते थे उसे दे नहीं सकते थे (देखें 2 पतरस 2:19)।

आयत 8. पिछली आयत में झूठे उपदेशकों का उल्लेख करने के पश्चात, अब यहूदा ने अपना ध्यान सीधे-सीधे उन्हीं पर केन्द्रित किया। उसने उन तीन उदाहरणों, जिन्हें उसने अभी रखा था, के तात्पर्यों को विस्तार से रखा। झूठे उपदेशकों ने परमेश्वर के द्वारा दुष्टों के न्याय के उदाहरणों से कुछ नहीं सीखा था। वे अविश्वासी इस्राएलियों के, स्वर्गदूतों के जिन्होंने अपने पद को स्थिर न रखा, तथा सदोम और अमोरा के पुरुषों के नमूनों पर चल रहे थे।

यह कल्पना करना कठिन है कि झूठे उपदेशकों का स्वप्नदर्शी होना उनके विद्रोह में कैसे ठीक बैठता है। इसे स्पष्ट करने के प्रयास में KJV शब्द का अनुवाद "मलिन स्वप्नदर्शी" करती है, परन्तु यूनानी शब्द "स्वप्न देखना" (ἐνυπνιάζομαι, *एनुपनियाजोमई)* में ऐसा कुछ भी नहीं है जिस में यौन अनैतिकता का सुझाव हो, यदि "मलिन" को जोड़ने का यह अभिप्राय है तो। KJV का सुझाव है कि यहूदा के विरोधियों के मन अनैतिकता, संभवतः यौन अनैतिकता, से इतने भर गए थे कि वे जो गलत कार्य करने जा रहे थे उसी के बारे "स्वप्न देखने" में मग्न रहते थे। इससे मीका का उन "बुराई की कल्पना" करके, फिर अपने "बिछौनों पर दुष्ट कर्म करते हैं" (मीका 2:1) का वर्णन स्मरण आता

है।

इससे अधिक संभावना यह है कि यहूदा के विरोधी अपने सिद्धांतों तथा अनैतिकता को उन स्वप्नों के आधार पर सही ठहराते थे जिनके लिए वे दावा करते थे कि उन्हें परमेश्वर ने दिखाए हैं। यदि यह सही है तो, KJV द्वार "मलिन" जोड़ना बात को और उलझा देता है। जे. एन. डी. केली के अनुसार, यहूदा ने झूठे उपदेशकों के "स्वप्नदर्शी" होने की ओर ध्यान इसलिए खींचा "क्योंकि उन्हें उन्मादपूर्ण दर्शन होते थे, या होने के दावे करते थे, और इनके आधार पर वे अपने सिद्धांतों और व्यवहार को सही ठहराने के प्रयास करते थे।"[7] संभवतः केली सही थे।

अलौकिक दर्शनों के दावे सामान्य युक्ति है जिसे झूठे उपदेशक, दोनों, वर्तमान तथा प्राचीन, प्रयोग करते हैं, लोगों का भरोसा जीतने और अपने दावों की पुष्टि करने के लिए। पौलुस ने अपने दर्शनों और उन दर्शनों के मध्य जिनका "महा-प्रेरित" अपने लिए दावा करते थे, तुलना की (2 कुरिन्थियों 12:1-4; देखें 2 कुरिन्थियों 11:5; 12:11; NIV)। वे जो कुलुस्से की कलीसिया को धमका रहे थे, अपना आधार "उन दर्शनों" को बनाते थे जिन्हें देखने का वे दावा करते थे (कुलुस्सियों 2:18)। तुलनात्मक रूप में "स्वप्नदर्शी" झूठे उपदेशकों का यही सबसे उत्तम स्पष्टीकरण है। इसे NASB विराम चिन्हों के द्वारा अच्छी प्रकार से रखती है जब वह वाक्यांश "स्वप्नों के द्वारा भी" को अर्ध-विरामों के द्वारा पृथक करती है। उन उपदेशकों का "स्वप्नदर्शी" होना कम से कम एक वह विधि थी जिसके द्वारा वे उसे, जो उनकी शारीरिक लालसा से अधिक कुछ नहीं था, उचित ठहराते थे। अपने स्वप्नों के द्वारा वे चाहे जिस भी दावे को उचित ठहराते हों, यहूदा ने बल दिया की उनका व्यवहार वैसा ही था जैसा सदोम के पुरुषों का।

यह कहा गया है कि एक ओर तो झूठे उपदेशक **शरीर को अशुद्ध करते** हैं, और दूसरी ओर वे, **प्रभुता को तुच्छ जानते हैं**। ये दोनों वाक्यांश यूनानी शब्दों μέν (*मेन*) और δέ (*डे*) के द्वारा निकटता से बंधे हैं। इस स्थान पर यहूदा का वर्णन 2 पतरस 2:10 पर दिए वर्णन के बहुत निकट है। प्रत्यक्षतः दोनों स्थानों पर वाक्यांशों, "revile angelic majesties" और "प्रभुता को तुच्छ जानते हैं" को एक समान समझना है। ये दोनों झूठे उपदेशकों के घमण्ड का चित्रण हैं।

यहूदा का "revile angelic majesties" से तात्पर्य उतना स्पष्ट नहीं है जितना अनुवाद संकेत करते हैं। यूनानी तो 2 पतरस 2:10 के समानान्तर है। अधिक शब्दार्थ अनुसार अनुवाद से, उसने कहा कि "वे महिमान्वितों की निन्दा करते हैं।" अनेकों अन्य अनुवादों के साथ NASB भी समझती है कि "महिमान्वितों" से अर्थ स्वर्गदूतों से है, परन्तु ऐसा होना निश्चित नहीं है। हमने 2 पतरस की टिप्पणियों में यह तर्क दिया है कि "महिमान्वितों" का सबसे अच्छा अर्थ कलीसिया के अधिकारी है। प्रेरित और अन्य जिन्होंने अधिकार सहित बातें कीं, इस व्याख्या के अनुसार "महिमान्वित" थे। विचार योग्य अन्य बातों में, यह समझना कठिन है कि स्वर्गदूतों की निन्दा द्वारा झूठे उपदेशकों का उद्देश्य कैसे उन्नति पा सकता था। जिन कलीसियाओं को यहूदा संबोधित करता था उनके

"अधिकार" तो मसीह के प्रतिनिधियों के हाथों में थे, विशेषतः प्रेरितों के। (अधिक जानकारी के लिए देखें 2 पतरस 2:10, 11 की टिप्पणियाँ।)

आयत 9. नए नियम में स्वर्गदूत **मीकाईल** के नाम का उल्लेख यहाँ और प्रकाशितवाक्य 12:7 में हुआ है। केवल यहीं उसे प्रधान स्वर्गदूत कहा गया है। शब्द "प्रधान स्वर्गदूत" यहाँ पर और 1 थिस्सलुनीकियों 4:16 में पाया जाता है। दानिय्येल में एक स्वर्गदूत का जिसका नाम मीकाईल है, जिसे "मुख्य प्रधान" कहा गया है, का तीन बार उल्लेख हुआ है (10:13, 21; 12:1)। इस नाम का अर्थ है "परमेश्वर के समान कौन है?" एकमात्र अन्य स्वर्गदूत जिसे बाइबल में नाम दिया गया है वह है जिब्राईल (दानिय्येल 8:16; 9:21; लूका 1:19, 26), यद्यपि एक तीसरा, राफेल, समस्त अप्रमाणित कृति तोबित में पाया जाता है।[8] जिब्राईल का अर्थ है "परमेश्वर का सामर्थी जन," और राफेल का अर्थ है "परमेश्वर ने चंगा किया है।"

मीकाईल की **शैतान से मूसा के शव** के विषय में वाद-विवाद की कहानी पुराने नियम में कहीं नहीं पाई जाती है। ऐसा होने के कारण, हम अचरज करते हैं कि इस कहानी के लिए यहूदा का स्त्रोत क्या रहा होगा। न केवल यह कहानी बाइबल में नहीं है, वरन यहूदा से पूर्व के किसी भी ऐसे दस्तावेज़ में नहीं है, जो प्राचीन संसार के समय से बचा रहा हो। परन्तु कुछ आरंभिक मसीही लेखक थे जो यह मानते थे कि मीकाईल का शैतान के साथ मूसा के शव के लिए वादा-विवाद करना नए और पुराने नियम के मध्य के समय की एक कृति द अज़ंपशन ऑफ मोसेस (मूसा का स्वर्गारोहण) से आया है। इक्कीसवीं शताब्दी के परिप्रेक्ष्य से, यह जानना कठिन है कि यहूदा की कहानी का स्त्रोत यही था कि नहीं।

यह सत्य है कि प्राचीन समय से एक बिना शीर्षक की कृति बची हुई है जिसे, उसकी विषय सामग्री के अनुसार, टेस्टामेंट ऑफ मोसेस (मूसा का आदेश) कहना अधिक सही होगा।[9] कुछ का मानना है कि बचे हुए टेस्टामेंट ऑफ मोसेस और अज़ंपशन ऑफ मोसेस एक ही कृति हैं। टेस्टामेंट ऑफ मोसेस अधूरी है, परन्तु जो भाग बच गया है उसमें मीकाईल का शैतान से मूसा के शव के लिए वाद-विवाद करने का कोई उल्लेख नहीं है। इस बात के लिए निश्चित नहीं हो सकते हैं कि अज़ंपशन ऑफ मोसेस बची हुई कृति का अंश है। अंत में हमें मानना ही पड़ेगा कि यह स्पष्ट नहीं है कि कहानी का आरंभ कहाँ से हुआ। सौभाग्यवश, यहूदा के स्त्रोत के बारे में हमारी जानकारी के अभाव से उसकी बात का महत्व कम नहीं होता है।

यहूदा द्वारा मीकाईल और शैतान के बीच की घटना से अन्य प्रश्न भी उठते हैं। क्या ऐसी घटना वास्तव में हुई? क्या किसी समय पर मीकाईल और शैतान में मूसा के शव को लेकर वास्तव में वाद-विवाद हुआ था? बड़ा प्रश्न उस गवाही का है जो बाइबल के लेखक इतिहास से लेते हैं। क्योंकि यहूदा ने इस घटना का उल्लेख किया है, इसलिए क्या यह मान लेना चाहिए कि यह घटना वास्तव में हुई थी?

ये प्रश्न महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि इनका उस बात पर प्रभाव है जिसका अर्थ हम

“प्रेरणा” मानते हैं, और इस पर भी कि बाइबल इतिहास को कैसे दर्ज करती है। यह स्पष्ट है कि बाइबल के प्रत्येक विवरण को वास्तव में हुई घटनाएं नहीं लिया जा सकता है। उदाहरण के लिए, जब यीशु ने कहा, “एक मनुष्य यरूशलेम से यरीहो को जा रहा था, कि डाकुओं ने घेरकर” (लूका 10:30), तो उसके शब्दों में ऐतिहासिक घटना होने के सभी गुण हैं। किंतु संदर्भ स्पष्ट करता है कि ये शब्द एक दृष्टांत का भाग हैं। दृष्टांत, एक संभावित बात ब्यान करता है, परन्तु उसके ऐतिहासिक होने का कोई दावा नहीं करता है। न्यायियों की पुस्तक में, गिदोन के एक पुत्र, योताम ने, शेकेम के लोगों को एक कहानी प्रस्तुत की। उसने कहा, “किसी युग में वृक्ष किसी का अभिषेक कर के अपने ऊपर राजा ठहराने को चले” (न्यायियों 9:8)। स्पष्ट है कि योताम यह नहीं कह रहा था कि यह घटना वास्तव में हुई। उसने कहानी को शेकेम के लोगों को उनके व्यवहार को दर्शाने के लिए प्रयोग किया।

संदर्भ निर्धारित करता है कि वर्णन की गयी घटना वास्तव में हुई थी कि नहीं। मीकाईल और शैतान के मध्य मूसा के शव को लेकर हुए विवाद की घटना में पाठक द्वारा यह निर्णय करने के लिए, कि वर्णन की जा रही घटना सत्य है कि नहीं, संदर्भ बहुत ही कम है। लेकिन, यह कहना अनुचित नहीं होगा कि मूसा के शव पर विवाद ऐसी काल्पनिक कहानी थी जिसे यहूदा के पाठक भली-भांति जानते थे। जो बात यहूदा कहना चाह रहा था वह उसके ऐतिहासिक घटना होने पर निर्भर नहीं थी। वह चाहे काल्पनिक थी या ऐतिहासिक, कहानी का उद्देश्य था उस बात का समर्थन करना जो यहूदा कहना चाह रहा था। मसीहियों में इस बात को लेकर मतभेद हो सकते हैं कि यहूदा द्वारा वर्णन की गई घटना सचमुच हुई थी कि नहीं। जिस बात में कोई संदेह नहीं है वह है कि यह कहानी पुराने नियम से संबंधित नहीं है।

चाहे यहूदा ने लोकप्रिय कथाओं का समावेश किया या किसी ऐतिहासिक घटना का हवाला दिया, मुद्दा वही था। इस बात में, मुद्दे की वैधता घटना के ऐतिहासिक होने पर निर्भर नहीं है। ऐसे अन्य प्रकरण हैं जिनके लिए बाइबल की शिक्षा की वैधता घटनाओं के ऐतिहासिक होने पर निर्भर है। एक सुरक्षित नियम यह है: जब किसी बाइबल लेखक द्वारा उठाया गया मुद्दा घटनाओं के सचमुच घटित होने पर निर्भर करता है, तो बाइबल के पाठक को उसे इतिहास से गवाही स्वीकार करना चाहिए। इसके विपरीत, जब मुद्दे की वैधता घटना के ऐतिहासिक होने से संबंधित नहीं हो, लेखक इतिहास से कोई दावा नहीं ले रहा है।

यहूदा ने कम से लेकर अधिक तक का तर्क प्रयोग किया, यद्यपि नकारात्मक उसे अस्पष्ट कर देता है। तात्पर्य यह है: यदि मीकाईल ने [शैतान के विरुद्ध] दोष लगाने का साहस न किया तो झूठे उपदेशकों को “जिन बातों को नहीं जानते, उन को बुरा भला” कहने से कितना अधिक बचना चाहिए। मीकाईल न्याय को परमेश्वर के हाथों में छोड़ने के लिए तैयार था। उसने कहा **“प्रभु तुझे डांटे!”** यदि ऐसा करना मीकाईल के लिए उचित था, तो नश्वरों के लिए ऐसा करना ही बुद्धिमता है।

आयत 10. पतरस के समान, यहूदा भी उनकी जो मसीही सन्देश के साथ समझौता कर रहे थे, भर्त्सना करने में असंयमित था। प्रकट अपमान के साथ उसने उन्हें ये लोग कहा। उसने आयत 8 में आरंभ किया था, "उसी रीति से ये स्वप्नदर्शी भी।" आगे आयत 12 में वह कहेगा, "यह ... समुद्र में छिपी हुई चट्टान सरीखे हैं।"

पहले ही यहूदा ने आयत 8 में उनके लिए कहा था कि वे उनको "बुरा-भला" कहते हैं जिन्हें परमेश्वर की ओर से कलीसिया की अगुवाई करने का अधिकार मिला है। किसी व्यक्ति को "बुरा-भला" कहना उसके बारे में अपमानजनक बातें करना है। जब जिसके लिए बुरा-भला कहा जा रहा हो वह परमेश्वर हो, तो इसका अर्थ "परमेश्वर की निन्दा" करना है। इसका अनुवाद NEB "परन्तु ये लोग जिन बातों को नहीं समझते हैं उन पर गालियाँ उडेलते हैं" करती है। NASB कहती है कि ये **लोग जिन बातों को नहीं जानते**, उन को बुरा भला कहते हैं।

उनके लुचपन के मार्गों का जनक उनके द्वारा स्वयं पर थोपी गई अज्ञानता तथा उनका अपनी बड़ाई करना है। यहूदा "इन लोगों" के बारे में विचार करने और जो हानि ये मसीह के कार्य कर रहे थे उससे इतना विचलित हो गया, कि उसका वाक्य गड़बड़ा गया; उसने अपने विचार को बीच में ही तोड़ दिया। यहूदा के शब्दों का आवेश NIV में प्रकट होता है, आयत के अंतिम भाग के अनुवाद में "... जिन बातों को वे अचेतन पशुओं के समान स्वभाव ही के द्वारा समझते हैं – उन ही बातों से वे नाश हो जाते हैं।"[10]

यहूदा ने आरोप लगाया कि "ये लोग"जो ज्ञान रखते थे वह मात्र पशु समान, स्वभाव के स्तर मात्र का था। जो वे करते थे उसके पीछे का कार्यकारी बल उनकी अपनी उत्तरजीविता और स्वयं को बड़ा दिखाना ही था। न केवल यह, वरन झूठे उपदेशक उन बातों का प्रचार करते थे "जिन बातों को नहीं जानते" थे। यहूदा ने संकेत किया कि जब मसीह विषय-वस्तु है, तो समझदारी का एक स्तर होता है जो सुसमाचार को ग्रहण कर लेने से आ जाता है। मसीही मसीह में वैसे रहते हैं जैसे मछली जल में रहती है। इसकी तुलना में, झूठे उपदेशक शरीर के दायरे में रहते हैं। उनके लिए मसीह में होने को समझ पाना वैसा ही होगा जैसा कि एक चूहे के लिए पानी में रहना समझा पाना। जैसे कि पानी में रहने से ही समझा सकता है कि वह जीवन कैसा होता है, उसी प्रकार व्यक्ति को मसीह में होने से ही समझ में आता है कि उसमें कैसी शान्ति मिलती है और वह कैसा जीवन अपने लोगों को देना चाहता है। "ये लोग" चाहे जो भी दावे करें, वे मसीह का अनुसरण नहीं कर रहे थे। इस कारण वे बिना समझ के थे।

यहूदा के समान, पौलुस ने भी बल दिया कि मसीही आत्मिक बातों को उस स्तर पर समझते हैं जिसे अविश्वासी आत्मा नहीं जानती है। यह बात 1 कुरिन्थियों में आई है: "परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उस की दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उन की जांच आत्मिक रीति से होती है" (1 कुरिन्थियों 2:14)। यहूदा ने भी ऐसे ही तर्क दिए। उसने बना कर रखा कि, ये लोग, मसीह

को नहीं जानते थे। वे स्वभाव पर निर्भर करते थे और पूर्णतः केवल प्रभाव डालने वाले स्तर तक ही जीते थे। वे **अचेतन पशुओं** के समान थे। वे ही बातें जिनके लिए वे दावा करते थे कि मसीहियों के लिए अच्छी हैं, परमेश्वर से दूरी उत्पन्न करती थीं। यहूदा को कोई संदेह नहीं था कि झूठे उपदेशकों का मार्ग कहाँ ले जा रहा है। वह चाहता था कि उसके पाठक जान लें कि वे उन में अपने आप को नाश करते हैं। यहूदा को चिंता थी कि उसके भाई और बहन उसी विनाश में उनका अनुसरण कर लेंगे, इसी लिए उसने ऐसा लिखा (आयतें 3, 4)।

आयत 11. यहूदा ने अपनी बात बलपूर्वक कहना जारी रखा। उन पर हाय! उसने कहा। उन अन्य लोगों के समान जिन्होंने परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया था, उन्हें भी प्रभु के प्रकोप और न्याय का सामना करना था। जैसा उसने पहले किया था यहूदा ने अपनी बात की पुष्टि के लिए पुराने नियम से तीन उदाहरणों को लिया। (1) झूठे उपदेशक **कैन** की सी चाल चल रहे थे। (2) **वे बिलाम के समान भ्रष्ट हो गए** थे। (3) इसके अतिरिक्त, जैसे कि अन्य जो अपनी महिमा के इच्छुक थे, चाहे इसके लिए उन्हें परमेश्वर के विमुख ही क्यों न होना पड़े, ये लोग **कोरह के समान विरोध कर के नाश** होते। यहूदा ने इससे पहले अपने विरोधियों की तुलना तीन समूहों से की थी: अविश्वासी इस्राएली, विद्रोही स्वर्गदूत, और सदोम के पुरुष (आयतें 5-7)। अभी भी पुराने नियम से लेते हुए, उसने अपना ध्यान तीन अतिरिक्त उदाहरणों की ओर किया। पिछले उदाहरण समूहों से थे: इस्राएली, स्वर्गदूत, और सदोम के पुरुष। इस आयत के उदाहरण उन व्यक्तियों के हैं जिनका परमेश्वर ने न्याय किया।

कम से कम तीन कारण हैं कि क्यों यहूदा ने इन विशिष्ट उदाहरणों को चुना होगा, यह प्रमाणित करने के लिए कि परमेश्वर का न्याय उसके विरोधियों के लिए निश्चित था। पहला, ये तीन यहूदा और उसके पाठकों के लिए परिचित शैलिबद्ध प्रारूप का भाग रहे होंगे। जब दुष्ट लोग विषय-वस्तु हों, तो ये तीन स्थापित उदाहरण रहे होंगे। दूसरा, यहूदा ने उन्हें बिना किसी विशेष कारण के यूँ ही चुन लिया होगा। तीसरा, इन में कुछ विशिष्ट रहा होगा जिससे कि वे यहूदा जिन विशेष उपदेशकों का सामना कर रहा था उनके लिए उचित उदाहरण ठहरें। परमेश्वर के प्रति उनकी अनाज्ञाकारिता का स्वरूप यहूदा के विरोधियों की अनाज्ञाकारिता के समान रहा होगा।

क्या "कैन की सी चाल" में ऐसा कुछ था जिससे वह उन झूठे उपदेशकों के लिए उचित उदाहरण बना जिनका सामना यहूदा कर रहा था? कैन की कहानी – उसका विद्रोह और उसके अपराध के परिणाम – उत्पत्ति 4 में हैं। कैन के अपने भाई से क्रोधित होने के पश्चात, परमेश्वर ने उसे दर्शन दिया। परमेश्वर कैन के क्रोध के प्रति संवेदनशील था। उसने करुणा सहित बातें कीं। परमेश्वर ने कैन से उसके क्रोध के बारे में पूछा, परन्तु उसने यह भी स्पष्ट कर दिया कि कैन का क्रोध अनुचित है। फिर उसने कहा, "यदि तू भला करे, तो क्या तेरी भेंट ग्रहण न की जाएगी? और यदि तू भला न करे, तो पाप द्वार पर छिपा रहता है, और उसकी लालसा तेरी ओर होगी, और तू उस पर प्रभुता करेगा" (उत्पत्ति 4:7)। इसके बाद

एक संक्षिप्त कथन आता है। उसमें बस इतना लिखा है, “तब कैन ने अपने भाई हाबिल से कुछ कहा” (उत्पत्ति 4:8)। प्रत्यक्षतः उसने परमेश्वर के साथ हुए वार्तालाप के बारे में बताया। हो सकता है कि भाइयों में विवाद हुआ हो, यद्यपि इसके बारे में सीधे-सीधे कुछ कहा नहीं गया है। परन्तु अगले ही शब्द बताते हैं कि वे लोग मैदान में थे, और कैन ने अपने भाई हाबिल को मार डाला।

नए नियम के समय के यहूदी कैन की कहानी से बहुत मुग्ध थे।[11] यदि यहूदा के अधिकांश या सभी पाठक, मसीह की ओर परिवर्तित हुए यहूदी थे, तो वे कैन के विषय कुछ यहूदी विचारों से परिचित रहे होंगे। विचारों को यदि छोड़ भी दें, तो भी उत्पत्ति से यह स्पष्ट है कि परमेश्वर से बात समझ लेने की ओर कैन का कोई रुझान नहीं था। झूठे उपदेशकों के समान, उसने परमेश्वर के धैर्यपूर्ण प्रोत्साहन को एक ओर झटक दिया। प्रधान स्वर्गदूत मीकाईल ने शैतान के विरुद्ध बुरा-भला कहकर कोई दोषारोपण करने की इच्छा नहीं रखी (आयत 9)। यहूदा में विरोधियों ने प्रेरित अधिकारियों के विरुद्ध बिना किसी संयम के बुरा-भला कहा। मीकाईल के उदाहरण का अनुसरण करने के स्थान पर, वे कैन के मार्ग पर चले, घमण्ड में अपना ही मार्ग ले लिया, परमेश्वर ने जो मार्गदर्शन उन्हें दिया, उस को त्याग दिया। कैन का यह उदाहरण असंगत नहीं लगता है। उसका व्यवहार यहूदा ने जो अपने विरोधियों के बारे में कहा उससे मेल खाता है।

“बिलाम” किराए पर लिए जाने के लिए उपलब्ध भविष्यद्वक्ता था। काश हमें उसके बारे में और पता होता। उसे कैसे बुलाया गया? वह कैसा व्यक्ति था? प्रत्यक्षतः उसमें कुछ अच्छे गुण थे जिस कारण परमेश्वर ने उसे अपने वचन बोलने के लिए चुना था। मुख्य कहानी में, बिलाम को हम गिनती 22–24 में पाते हैं। वह भविष्यद्वक्ता मोआब के राजा द्वारा उसका ध्यान करने से प्रभावित था। बालाक ने एक उच्च प्रतिनिधि मंडल और उदार भेंट उसे भेजी थी। वह जाना तो चाहता था, किंतु वह परमेश्वर का सेवक भी था। परमेश्वर ने कहा, “तू इनके संग मत जा” (गिनती 22:12)।

संभव है कि बालाक के प्रतिनिधि मंडल ने उसे बताया हो कि बिलाम कैसे डांवांडोल हो रहा था। मोआब के राजा ने एक अन्य और भी उच्च संगत को, और अधिक धन के साथ भेजा। स्पष्टतः बिलाम संदेशवाहकों के साथ जाना चाहता था। परमेश्वर ने उससे जो कहा उसका तात्पर्य था कि “जा, और जो तू करना चाहता है वह कर।” “बिलाम के समान भ्रष्ट” का अर्थ है उसके जैसे परमेश्वर को नीलामी पर चढ़ा देना, उसके वचन को सबसे अधिक बोली लगाने वाले को बेच देना।

जैसे हुआ, बिलाम ने इस्राएल को श्राप नहीं आशीष दी, परन्तु बिलाम पूर्णतया विफल भी नहीं हुआ। बालाक को अपने धन की कीमत मिल गई। बाद में मूसा ने इस्राएल से उनके मोआबी स्त्रियों के प्रति हल्के व्यवहार के संबंध में ये शब्द कहे, “देखो, बिलाम की सम्मति से, पोर के विषय में इस्राएलियों से यहोवा का विश्वासघात इन्हीं ने कराया, और यहोवा की मण्डली में मरी फैली” (गिनती 31:16; देखें प्रकाशितवाक्य 2:14)। बिलाम ने मोआब को दिखाया कि इस्राएल

को कैसे कामुकता में फंसाए जिससे पाप हो। बिलाम का उदाहरण, कैन के उदाहरण के समान, उन झूठे उपदेशकों के लिए उचित था जिनका यहूदा सामना कर रहा था।

यहूदा द्वारा उद्धरित व्यक्तिगत रीति से किए गए विद्रोह के तीनों उदाहरणों में से केवल बिलाम ही है जिसका उल्लेख पतरस ने भी किया है (2 पतरस 2:15)। इस भविष्यद्वक्ता ने यहूदा के साथ झूठे उपदेशकों के दो गुण साझा किए। पहला, उसकी सम्मति द्वारा मोआब ने इस्राएल को कामुकता और मूर्तिपूजा में फंसा लिया। बिलाम के समान, झूठे उपदेशक भी लोगों को फुसला कर लुचपन में फंसा रहे थे। दूसरे, बिलाम की सर्वप्रथम रुचि उस धन में थी जिसका प्रस्ताव उसे दिया गया था। उसके समान, झूठे उपदेशक परमेश्वर की महिमा के स्थान पर अपने लाभ के लिए अधिक चिंतित थे। दोनों पतरस और यहूदा ने बिलाम पर किराए का भविष्यद्वक्ता होने का दोष लगाया। उसी प्रकार, झूठे उपदेशक परमेश्वर के लोगों को अपने लाभ के लिए प्रयोग कर रहे थे। क्या यहूदा ने बिलाम को अनाज्ञाकारिता का अनियमित उदाहरण बना कर स्मरण किया? स्पष्टतः नहीं! जिन झूठे उपदेशकों का वह सामना कर रहा था वे बिलाम की परम्परा का अनुसरण कर रहे थे।

चलते-चलते हमें इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि यहूदा द्वारा बिलाम को किराए का उपदेशक कहना परमेश्वर के राज्य के लिए कार्य करने वालों को भौतिक सामग्री द्वारा सहायता देने के विरुद्ध कोई दोषारोपण नहीं है। नए नियम में यह स्पष्ट है कि जो मसीह का प्रचार करने के लिए अपना सारा समय देते हैं उन्हें उन विश्वासियों से सहारा मिलता था जो उनका आदर करते थे (1 कुरिन्थियों 9:3-14; 1 तिमुथियुस 5:17, 18)। परन्तु परमेश्वर के राज्य में अपना सारा समय देकर कार्य करने वाला व्यक्ति किसी बिजली मिस्त्री या चिकित्सक के समान वेतन के लिए कार्य नहीं करता है। यदि वह ऐसा करे तो वह मात्र किराए पर कार्य करने वाला होगा। वह परमेश्वर के लिए और उसे उत्तरदायी होकर कार्य करता है।

"कोरह" एक लेवी था जो इस बात से रुष्ट था कि मूसा और हारून को दी गयी याजकीय सेवकाई में उसका कोई भाग नहीं था। उसकी कहानी गिनती 16:1-11 में है। कोरह को कुछ साथी मिल गए और वह मूसा के प्रतिनिधित्व को चुनौती देने के लिए निकल पड़ा। उन्होंने मूसा और हारून से कहा, "तुम यहोवा की मण्डली में ऊंचे पद वाले क्यों बन बैठे हो?" (गिनती 16:3)। मूसा ने उनकी चुनौती का प्रत्युत्तर देते हुए कहा, "क्या यह तुम्हें छोटी बात जान पड़ती है, कि इस्राएल के परमेश्वर ने तुम को इस्राएल की मण्डली से अलग कर के अपने निवास की सेवकाई करने, और मण्डली के साम्हने खड़े हो कर उसकी भी सेवा टहल करने के लिये अपने समीप बुला लिया है?" (गिनती 16:9)। कैन और बिलाम के समान कोरह ने भी महिमा की अपनी इच्छा को परमेश्वर की महिमा को काट लेने दिया। जो बात यहूदा के इन तीनों उदाहरणों को साथ रखती है वह है, परमेश्वर की नहीं वरना अपनी ही इच्छा का पालन करने की उनकी घमण्डी

भावना। जैसे कि कैन, बिलाम और कोरह के थे, वैसे ही झूठे उपदेशकों के गुण भी घमण्ड, अक्खड़पन, और स्वेच्छा पालन थे। झूठे उपदेशकों पर परमेश्वर का न्याय इतना अवश्यंभावी था कि यहूदा कह सका कि वे कोरह के समान विरोध कर के **नाश हुए** हैं।

आयत 12. झूठे उपदेशक अक्खड़ और निर्भीक थे। उनमें परमेश्वर के प्रति कोई श्रद्धा नहीं थी और न ही वे परमेश्वर के न्याय के विषय कोई विचार करते थे। यहूदा ने अपने विरोधियों की ओर ध्यान खींचने वाले रूपक अलंकारों द्वारा दोषारोपण किया। कुछ रूपक आज हमारे लिए उतने स्पष्ट नहीं हैं जितने हम चाहेंगे कि वे हों। जैसे NASB उसे समझने पाई है, यहूदा ने कहा कि झूठे उपदेशक छिपी हुई चट्टानें हैं। यूनानी शब्द σπιλάς *(स्पिलास)* जो NASB के अनुवाद के पीछे है, नए नियम में केवल यहीं आता है। प्राचीन लेखक इसे दो भिन्न अर्थों के साथ प्रयोग करते थे। कभी इसका अर्थ होता था चट्टानों का एक ऐसा ढेर जो सतह के निकट था किंतु लहरों के कारण दिखाई नहीं देता था – दूसरे शब्दों में, एक समुद्री चट्टान। यदि यहूदा ने इसे ऐसे प्रयुक्त किया तो वह कह रहा था कि झूठे उपदेशक पाखंडी थे। उनके कारण जो ख़तरा था वह और भी गंभीर था क्योंकि वे अपनी बुरी योजनाओं को दिखाते नहीं थे, या कम से कम उनको ऐसे भेष बदल कर रखते थे कि वे हानिकारक प्रतीत नहीं होती थीं। संभवतः यहूदा यही बताना चाहता था। परन्तु एक संभावना और है।

कभी-कभी *spilas* का अर्थ होता है किसी भी प्रकार का “धब्बा” या “कलंक।” इस शब्द को KJV, NIV, तथा NRSV इसी सामान्य अर्थ में समझती हैं। “छिपी हुई चट्टानों” के स्थान पर KJV में आया है, “ये तुम्हारी प्रेम सभाओं में धब्बे हैं।” इसे NIV अनुवाद करती है, “ये मनुष्य तुम्हारे प्रीति-भोजों में कलंक हैं।” NRSV कहती है, “ये तुम्हारी प्रीति-भोजों में कलंक हैं।” यदि शब्द का यह अर्थ है तो यहूदा कह रहा था कि झूठे उपदेशक पीपे में रखे हुए सड़े हुए सेब के समान हैं। वे मसीहियों को अपने प्रेम-भोजों का लुचपन और भक्तिहीन रीति से उपयोग करने को फुसलाने के द्वारा कलीसिया की अच्छी सहभागिता को दूषित कर देते हैं।

संदर्भ इस शब्द के दोनों अर्थों में से एक को चुनने के लिए कठिनाई उत्पन्न करता है। परन्तु यदि यह विचार किया जाए कि लहरों के नीचे छिपी चट्टानें ऐसा विनाशकारी बल हैं जो जहाज़ को नाश कर सकता है, तो संभव है कि यहूदा दोनों ही अर्थों को कहना चाह रहा था। उसने जानबूझकर ऐसा शब्द चुना हो जो झूठे उपदेशकों पर छिपी हुई चट्टानें और कलंक होने का दोष लगाए। झूठे उपदेशकों ने अपने वास्तविक चरित्र को छिपा कर रखा होगा। ऐसा करने से वे परमेश्वर के लोगों की प्रतिष्ठा पर ऐसा गहरा कलंक लगाने पाते जैसा वे किसी अन्य रीति से नहीं कर सकते थे। प्रत्यक्षतः यहूदा के पाठकों ने उनकी वास्तविकता को नहीं पहचाना था क्योंकि वे अपने आप को झूठे बहानों के अंतर्गत प्रस्तुत करते थे।

यह आशा की जाती थी कि जब मसीही सहभागिता-भोज के लिए एक साथ बैठते थे तो मसीहियत की उन्नति होती थी। प्रारंभिक विश्वासी इसे **प्रेम सभा**

कहते थे। यद्यपि प्रभु-भोज इन "प्रेम-सभाओं" के तुल्य नहीं होता था, फिर भी इन दोनों के मध्य कुछ संबंध प्रतीत होता है। ऐसा लगता है कि कुछ कलीसियाओं में मसीही पहले साथ भोजन करते थे और फिर प्रभु-भोज में भाग लेते थे (1 कुरिन्थियों 11:17-22; 2 पतरस 2:13 पर टिप्पणियाँ देखें)। झूठे उपदेशक मसीही संगति को समर्पित इस समय का अपने घृणित सिद्धांत के प्रचार के लिए उपयोग करते थे। वे अपने व्यवहार में निर्लज थे। उनमें परमेश्वर के लिए आदर या मसीह की देह के निर्माण के प्रति कोई रुचि नहीं थी। यहूदा ने लिखा, **ये तुम्हारे साथ खाते-पीते हैं, और बेधड़क अपना ही पेट भरने वाले** रखवाले हैं। यूनानी शब्द ποιμαίνω *(पोइमैनो)* वह क्रिया है जिसका अनुवाद NASB "ध्यान रखना" करती है। जब इसका और अधिक शब्दार्थ के साथ अनुवाद किया जाए तो इसका अर्थ होता है "चरवाहे के समान कार्य करना।" इस वाक्यांश का NIV "अपनी देखभाल करने वाले" के स्थान पर "चरवाहे जो केवल अपने आप को खिलाते-पिलाते हैं" अनुवाद करती है।

परमेश्वर के लोगों की देख-भाल करना कठिन कार्य है। यीशु ने कहा कि उसके राज्य में दास से बढ़कर और कोई कार्य नहीं है (लूका 22:25, 26)। एक अच्छा चरवाहा अपने गल्ले की देख-भाल करता है, परन्तु सभी चरवाहे अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह सेवा के लिए नहीं करते हैं। जिन उपदेशकों का यहूदा ने सामना किया वे चरवाहा होने का भेष धारण किए हुए थे, परन्तु वे चरवाहे के समान कार्य नहीं करते थे। परमेश्वर के लोगों की अगुवाई करना स्वीकार करने के पश्चात अपने स्थान का उपयोग अपनी संतुष्टि के लिए करने वाले वे पहले नहीं थे। पुराने नियम में परमेश्वर ने यहेजकेल के द्वारा कहा, "मेरे चरवाहों ने मेरी भेड़-बकरियों की सुधि नहीं ली, और मेरी भेड़-बकरियों का पेट नहीं, अपना ही अपना पेट भरा" (यहेजकेल 34:8)। यहूदा में झूठे उपदेशकों ने कलीसिया को आत्मिक ज्योति देने का दावा तो किया, परन्तु कलीसिया से उसकी आत्मिक सामर्थ्य खाली कर दी।

जबकि झूठे उपदेशकों ने आत्मिक पोषण देने की प्रतिज्ञा की, वास्तव में वे **निर्जल बादल**, अस्थिर और निष्फल हैं। यहूदा ने, पतरस के समान, उन उपदेशकों के विरुद्ध असंयमित भर्त्सना निर्देशित की। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि लेखक वास्तव में झल्ला गया। यहूदा को कई रुचि नहीं थी कि वह उनके सिद्धांत की विवेचना प्रस्तुत करे। इसके स्थान पर उसने उन पर सीधा व्यक्तिगत आक्रमण किया। वे जो थे वही उनकी शिक्षा का आधार था। यहूदा के प्रत्येक रूपक, जो भरपूर और विविध हैं, उस चित्र में अंशदान करते हैं जो वह "उन लोगों" का बनाना चाहता था।

प्रथम, वे वह नहीं देते थे जिसकी प्रतिज्ञा वे करते थे, वे "निर्जल बदल थे।" कनान के सूखे वातावरण में, बहुधा जल एक दुर्लभ वस्तु थी। जब भूमध्यसागर से पश्चिमी वायु बह कर आती थी और भूमि पर ऊपर को उठती थी, तो वह ठंडी हो जाती थी। बादल बन जाते, कभी काले और शकुनात्मक। जैसे-जैसे दिन की गर्मी चढ़ती, बहुधा वे बिखर जाते, भूमि पर कोई वर्षा नहीं हो पाती। वर्षा के

आश्वासन और भूमि के लिए सहायता की प्रत्याशा दु:ख को और बढ़ा देती थी। झूठे उपदेशकों के पास कलीसिया को देने के लिए कुछ नहीं था। उनके पास केवल शब्द थे – शब्द जो पाप से राहत, परमेश्वर के साथ शान्ति, जीवन के आने की प्रतिज्ञा तो करते थे परन्तु परिणाम कुछ नहीं होता था। अन्ततः, उनसे कुछ भला नहीं होता था। जो उनकी सुनते थे वे अपने आप को परमेश्वर के निकट नहीं वरन और अधिक दूर पाते थे।

झूठे उपदेशक परमेश्वर की कलीसिया के लिए और भी अधिक खतरा थे क्योंकि वे अस्थिर और बदल जाने वाले थे। उनके सन्देश उस ओर मुड़ जाते थे जिस ओर जाने से उनकी योजनाएं पूरी हो सकती थीं। उन्हें **हवा उड़ा ले जाती** थी। सुझाव यह है कि वे अपने से बाहर के किसी बल के अधीन थे।

यहूदा ने झूठे उपदेशकों के विरुद्ध अपने निन्दा-भाषण को ज़ारी रखा। वे **पतझड़ के निष्फल पेड़** थे। यदि इतना काफी नहीं था, वे **दो बार मर चुके** थे। पेड़ के रूपक की ओर लौटते हुए, उसने कहा वे **जड़ से उखड़ गए हैं**, कुछ भी योग्य ला पाने के अयोग्य हैं। आयत में विराम चिन्हों का प्रयोग अर्थ में थोड़ा सा परिवर्तन कर देता है। NASB और NRSV शब्द "निष्फल" को "पतझड़ के पेड़" के साथ लेते हैं। अर्धविरामों के उपयोग के द्वारा KJV तीन के स्थान पर चार रूपकों का सुझाव देती है। उसमें आया है, "ऐसे पेड़ जिनके फल मुरझा जाते हैं, निष्फल, दो बार मर चुके, जड़ से उखाड़े हुए।" NIV "निष्फल" को उखाड़े हुए पेड़ समझती है। उसमें "पतझड़ के पेड़, निष्फल और उखड़े हुए – दो बार मर चुके" आया है। ये अनुवाद अर्थ में थोड़ी भिन्नता दिखाते हैं, परन्तु सभी में तात्पर्य स्पष्ट है: झूठे उपदेशक जिस बात का आश्वासन देते थे उसे प्रदान नहीं कर सकते थे।

फलदायी पेड़ फसल पाने के लिए लगाए जाते हैं। इस्राएल के विरुद्ध परमेश्वर की सबसे आम शिकायत थी लोग भक्ति के कोई फल नहीं लाते थे। यशायाह ने दाख की बारी से समानता का उपयोग किया, परन्तु विषय वही था। भविष्यद्वक्ता ने वर्णन किया कि कैसे परमेश्वर ने अपनी दाख की बारी के लिए तैयारी की, खाद डाली, सुरक्षा का बाड़ा बाँधा। "तब उसने दाख की आशा की, परन्तु उस में निकम्मी दाखें ही लगीं" (यशायाह 5:2)। परिणामस्वरूप परमेश्वर ने दण्ड की घोषणा की: "मैं उसके कांटे वाले बाड़े को उखाड़ दूंगा कि वह चट की जाए, और उसकी दीवार को ढा दूंगा कि वह रौंदी जाए" (यशायाह 5:5ब)। यह समानता भविष्यद्वक्ताओं में आम है (यिर्मयाह 2:21; 12:10; यहेजकेल 19:10-14; होशे 10:1)। यीशु ने भी इसी अलंकार का प्रयोग किया (मत्ती 21:33-41)। पतरस ने झूठे उपदेशकों का वर्णन ऐसी ही समानता द्वारा किया, और उसका मुद्दा वही था। पतरस के लिए वे "अन्धे कुएं, और आँधी के उड़ाए हुए बादल हैं" (2 पतरस 2:17)।

जब यहूदा ने कहा कि वे उपदेशक "दो बार मर चुके" हैं, तो यह प्रत्येक संदेह को मिटा देने के लिए था। अपने विषैले सिद्धांतों के साथ वे कोई पोषक फल प्रदान नहीं करते थे। वे वर्षा द्वारा पुनः जीवित हो उठने वाले पौधे नहीं थे। सारा

जीवन निकल चुका था। उन्हें बहुत पहले “उखाड़” दिया गया था। यहूदा के पाठक उनसे पलट जाने के द्वारा अच्छा करते। समझौते के लिए कोई स्थान नहीं था।

आयत 13. याकूब के समान, यहूदा ने भी उनकी, जो उनके जीवन के विषय परमेश्वर के मार्गदर्शन का तिरस्कार कर देते हैं, तुलना **समुद्र की लहर जो हवा से बहती** और उछलती है (याकूब 1:6) से की। किसी को पता नहीं है कि उनसे क्या आशा रखी जा सकती है। उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता था। न केवल वे अस्थिर और अप्रत्याशी हैं, वरन वे मनुष्यों को परमेश्वर से दूर ले जाते थे। **वे डांवांडोल तारे** हैं। अंग्रेजी शब्द “planet” (ग्रह) “भटकने” (πλανήτης, *प्लेनेट्स)* के लिए प्रयुक्त यूनानी शब्द से आया है। स्थिर सितारों के विपरीत प्लैनेट्स (ग्रह) उनको जो उनपर निर्भर करते भटका सकते थे। झूठे उपदेशक सदा काल तक **घोर अन्धकार** के लिए रखे गए थे और साथ ही उन्हें सदा काल की आग को भी सहना था (आयत 7)।

भक्तिहीन मनुष्यों के लिए हनोक की भविष्यवाणी (14-16)

[14]और हनोक ने भी जो आदम से सातवीं पीढ़ी में था, इन के विषय में यह भविष्यद्ववाणी की, “देखो, प्रभु अपने लाखों पवित्रों के साथ आया, [15]कि सब का न्याय करे, और सब भक्तिहीनों को उन के अभक्ति के सब कामों के विषय में, जो उन्होंने भक्तिहीन हो कर किये हैं, और उन सब कठोर बातों के विषय में जो भक्तिहीन पापियों ने उसके विरोध में कही हैं, दोषी ठहराए।” [16]ये तो असंतुष्ट, कुड़कुड़ाने वाले, और अपने अभिलाषाओं के अनुसार चलने वाले हैं; और अपने मुंह से घमण्ड की बातें बोलते हैं; और वे लाभ के लिये मुंह देखी बड़ाई किया करते हैं।

आयतें 14, 15. जब यहूदा ने लिखा, **“देखो, प्रभु अपने लाखों पवित्रों के साथ आया, कि सब का न्याय करे”** तब वह 1 हनोक के नाम से जानी जाने वाली एक अप्रमाणित कृति से उद्धरण कर रहा था। यहूदा ने उस दस्तावेज़ में से 1:9 को उद्धृत किया: “देखो वह अपने एक करोड़ पवित्र जनों के साथ सबका न्याय करने के लिए आएगा।”[12] पहला हनोक एक जटिल कृति है जो सदियों से जानी जाती है और जिसका गहन अध्ययन होता आया है। विद्वानों में सामंजस्य है कि उसकी रचना मसीह से पहले और बाद की आरंभिक शताब्दियों में चरणों में हुई। जिन्होंने 1 हनोक का ध्यान से अध्ययन किया है उनका मानना है कि जिस भाग को यहूदा ने उद्धृत किया वह मसीह-युग से पूर्व लिखा गया था।

बहुत कम हैं जो यह विवाद करेंगे कि 1 हनोक उसी के द्वारा लिखा गया जिसके विषय कहा गया है कि, “और हनोक परमेश्वर के साथ-साथ चलता था; फिर वह लोप हो गया क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया” (उत्पत्ति 5:24)। यह

महत्वपूर्ण है कि **हनोक आदम से सातवीं पीढ़ी में था**। उत्पत्ति 5 की वंशावली आदम से आरंभ होती है और हनोक सातवें स्थान पर है। पद संज्ञा "आदम से सातवाँ" 1 हनोक में भी आती है।[13]

यद्यपि न तो यहूदियों ने और न ही मसीहियों ने, कुछ को छोड़ कर, 1 हनोक को प्रमाणित पुस्तकों में माना है, परन्तु यह कुछ दायरों में बहुत आदर प्राप्त कृति थी। यहूदा ने 1 हनोक को "पवित्रशास्त्र" नहीं कहा, परन्तु उसने उसे वैसे ही उद्‌धृत किया जैसे अन्य नए नियम के लेखकों ने पवित्रशास्त्र को किया है। उसने हनोक के शब्दों को वैसा ही स्थान दिया जैसा पौलुस ने यशायाह को दिया है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि यहूदा उत्पत्ति 5:21-24 के हनोक के बारे में कह रहा था।

हम में से जो यह मानते हैं कि नए नियम के लेखकों ने पवित्र आत्मा के अधिकार और प्रेरणा से लिखा है, उनके लिए 1 हनोक एक समस्या प्रस्तुत करता है। यह कहना कि कोई दस्तावेज़ प्रेरणा द्वारा है इसकी पुष्टि करता है कि वह सत्य है। वह इसलिए सत्य है क्योंकि वह परमेश्वर की प्रेरणा से है और परमेश्वर सत्य है। फिर भी, इस प्रकरण में यहूदा ने जिन शब्दों को हनोक के लिए ठहराया है वे ऐसे दस्तावेज़ से आते हैं जो हनोक द्वारा लिखा हुआ हो ही नहीं सकता है, कम से कम वह हनोक तो नहीं जो "आदम से सातवीं पीढ़ी में था।" इस उद्धरण के विषय में अनेक प्रश्न विश्वासियों तथा अविश्वासियों द्वारा उठाए जा सकते हैं: क्या यहूदा ने वास्तव में यह माना कि वह दस्तावेज़ उस हनोक द्वारा लिखा गया जो आदम से सातवीं पीढ़ी में था? क्या मसीही और यहूदी विद्वान इस बात पर सहमत नहीं हैं कि 1 हनोक यीशु के जन्म से पहले और बाद की शताब्दियों में लिखा गया? क्या यह विश्वासयोग्य होगा कि हम इस बात का इनकार करें कि यहूदा ने जिन शब्दों को हनोक के लिए ठहराया वे उस दस्तावेज़ से नहीं लिए गए जिसे हम 1 हनोक कहते हैं? मसीहियों के लिए इन प्रश्नों से जूझने के दो कारण हैं: (1) यह सत्यनिष्ठा की बात है। जब मसीही इस बात की पुष्टि करते हैं कि पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से है, तो उन्हें प्रेरणा की अपनी समझ का यहूदा के लिखे गए के साथ सामंजस्य बना लेना चाहिए। (2) यह गवाही की बात है। मसीहियों को किसी भी मनुष्य, विश्वासी या अविश्वासी, को उत्तर देने के लिए सदा तैयार रहना चाहिए – अर्थात अपने अन्दर रखी हुई आशा के लिए।

जबकि यहूदा का हनोक से उद्धरण उनके लिए समस्या है जो बाइबल के शब्दों का प्रेरणा पाया हुआ होना मानते हैं, फिर भी यह अजेय समस्या नहीं है। ऐसा कोई संकेत नहीं है कि यहूदा यह मानता था कि 1 हनोक "पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे" (2 पतरस 1:21) गए मनुष्यों द्वारा लिखा गया। यहूदा ने यह नहीं कहा कि जिन शब्दों को वह उद्‌धृत कर रहा है वे पवित्रशास्त्र हैं। केवल उद्‌धृत कर देने से यह तात्पर्य नहीं हो जाता है कि लेखक ने उसे पवित्रशास्त्र मान लिया है। उदाहरण के लिए, पौलुस ने भी कभी-कभी अपनी बात को बलपूर्वक रखने के लिए सांसारिक लेखकों को उद्‌धृत किया। इससे भी अधिक, उसने कम से कम एक मूर्तिपूजक विद्वान को भविष्यद्वक्ता भी कहा (तीतुस 1:12)। यह धारणा

रखना आवश्यक नहीं है कि अपनी कृति में किए गए उद्धरण को महत्व देने के लिए यहूदा ने 1 हनोक को परमेश्वर के लोगों के लिए वैसे ही अधिकार के स्तर की कृति माना जैसा कि व्यवस्था, भविष्यद्वक्ता, और अन्य लेख थे।

एक विचार कहता है कि जल प्रलय से पहले के हनोक ने वास्तव में वे शब्द कहे या लिखे जो यहूदा ने उद्धृत किए, और किसी प्रकार से परमेश्वर के विधान में वे 1 हनोक में सुरक्षित रखे गए। इस विचार के लिए यह मानना आवश्यक होगा कि हनोक के शब्द लिखित या मौखिक रूप में जल प्रलय से होकर, इस्राएल के चार सौ वर्ष मिस्र में निवास, चालीस वर्ष की जंगल यात्रा में, और इस्राएल के हज़ार वर्ष दुर्भाग्य में होने पर भी सुरक्षित रहे। इससे मिलता-जुलता कुछ और हुआ जब परमेश्वर ने हम पर अपने सृष्टि की रचना के प्रकरणों को प्रकट किया, चाहे वे प्रकरण उन घटनाओं का वर्णन करते हैं जो जल प्रलय से बहुत पहले हुईं थीं। यहूदा के प्रकरण में, पवित्र आत्मा ने उसका मार्गदर्शन किया होगा कि 1 हनोक से वह चुने जो सत्य है। लेकिन जो इस विचार को मानते हैं उन्हें यह स्वीकार करना होगा कि अन्य कोई भी प्राचीन लेखक, जिन्होंने बाइबल लिखी उनके सहित भी, हनोक द्वारा भविष्य के लिए सौंपे गए शब्दों के बारे में कुछ नहीं जानता है। कम से कम ऐसा कोई प्रमाण तो नहीं है कि वे जानते हैं।

इस उद्धरण के विषय एक अन्य विचार है कि यहूदा अपनी बात को बल देने के लिए 1 हनोक को सामान्यतः उद्धृत कर रहा था। प्रत्यक्षतः यहूदा उन लोगों को लिख रहा था जो 1 हनोक से भली-भांति परिचित थे। इसके अतिरिक्त, आरंभिक पाठक इस बात से अवगत होंगे कि यह आदम से सातवें हनोक से है। यह संभव है कि यहूदा ने अपने आप को प्रचलित बात के उपयोग करने के अनुकूल मात्र बनाया। यहूदा और उसके पाठक समझते थे कि जिस कृति को उसने उद्धृत किया वह हनोक से है। उस समय पर यहूदा इस बात को लेकर चिंतित नहीं था कि दस्तावेज़ को किसने लिखा और उसे कब लिखा गया। वह अपनी बात रखने के लिए केवल उन शब्दों को लेना चाहता था। मेरा मानना यह है कि यह विचार अधिक संभव है।

यहूदा ने जो 1 हनोक से उद्धृत किया उसमें कोई चौंका देने वाला नया विचार और कोई नई भविष्यवाणी नहीं है, उस सामान्य पुष्टिकरण के अतिरिक्त कि प्रभु आने वाला था। यहूदा का, शेष बाइबल के समान, उसके संदर्भ में अध्ययन किया जाना चाहिए। 1 हनोक से लिया गया उद्धरण यह माँग नहीं करता है कि पाठक इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि यहूदा का मानना था कि जिन शब्दों को वह उद्धृत कर रहा है वे उत्पत्ति 5:21-24 के हनोक द्वारा लिखे या बोले गए। जिस कृति को यहूदा ने उद्धृत किया उसके विषय हम यह जानते हैं कि वह मसीह के ठीक पहले और बाद के वर्षों में उत्पन्न हुई थी। यहूदा ने 1 हनोक से शब्दों को लेते हुए यह कहा कि परमेश्वर झूठे उपदेशकों का जो मसीही शिक्षाओं को बिगाड़ रहे थे, न्याय करने के लिए आएगा।

यह महत्वपूर्ण है कि हम निम्न की पुष्टि करें: (1) नए नियम के सभी दस्तावेज़ परमेश्वर की प्रेरणा से हैं। इसलिए मसीह की कलीसिया के लिए सभी

आधिकारिक हैं। (2) यहूदा ने जो भी लिखा वह परमेश्वर द्वारा प्रेरित है। इसलिए वह सही भी है। (3) मसीहियों को प्रेरणा को वैसे समझना है जैसा पवित्रशास्त्र प्रस्तुत करता है, न कि प्रेरणा के तात्पर्य की किसी पूर्व-धारणा के अनुसार। (4) यहूदा ने हनोक को प्रेरणा के अंतर्गत यह समझाने के लिए उद्धृत किया कि परमेश्वर चाहता है कि यहूदा के आरंभिक पाठक और बाद के भी सभी पाठक इस बात को समझ लें। (5) यहूदा का कहना यह था कि झूठे उपदेशक जिन्होंने उन कलीसियाओं को परेशान किया जिन्हें वह संबोधित करता था, और इससे सभी झूठे उपदेशकों के लिए भी तात्पर्य था, कि वे मसीह के पुनःआगमन पर परमेश्वर द्वारा न्याय के लिए बुलाए जाएंगे।

जो लोग शारीरिक और अनैतिक जीवन व्यतीत करते हैं उनके लिए 1 हनोक के शब्द परमेश्वर के न्याय की संपूर्णता को व्यक्त करने के योग्य माध्यम हैं। कार्यकारी शब्द भक्तिहीनों है। यह NASB में आयत 15 में चार बार आया है, और विशेषणों ἀσέβεια *(असेबिया)* और ἀσεβής *(असेबेस)* तथा क्रिया ἀσεβέω *(असेबेयो)* के लिए आया है। यहूदा ने इसे उन झूठे उपदेशकों का वर्णन करने के लिए सही शब्द माना जिनका वह सामना कर रहा था। 1 हनोक के वास्तविक शब्द कुछ इस प्रकार से हैं: "वह दुष्टों का नाश करेगा और सभी शरीरों को उनके किए के अनुसार दोषी ठहराएगा, उन सब बातों के लिए जो पापियों और दुष्टों ने उसके विरुद्ध की हैं।" 1 हनोक का यूनानी संस्करण जब यहूदा के साथ रखा जाता है तो शब्दों में निकटता का संबंध दिखाई देता है।

यहूदा ने कोई दावा नहीं किया कि हनोक वास्तव में उन उपदेशकों के विषय में लिखा रहा था जिनका उसे तथा उसके पाठकों को सामना करना पड़ रहा था। वरन, उसके द्वारा 1 हनोक के शब्दों को उद्धृत करना यह बताता है कि जो उस पुस्तक में "भक्तिहीनों" के लिए लिखा गया था वही उन पर भी लागू होता था जिनके विषय उसने लिखा है। झूठे उपदेशकों का घमण्ड एक समस्या बनी हुई थी। वे परमेश्वर के विरुद्ध कठोर बातें बोलते थे जिससे उनका **भक्तिहीन पापी** होना दिखाई देता था। इसलिए, उन्हें उस **न्याय** का सामना करना था, अर्थात परमेश्वर द्वारा दोषी ठहराए जाने का।

आयत 16. झूठे उपदेशक भोले लोगों को कम से कम तीन विधियों से धोखा देते थे। प्रथम, वे उन पर से जो प्रेरितों का सन्देश देते थे विश्वास घटा देते थे। वे असंतुष्ट, कुड़कुड़ाने वाले थे। सकारात्मक आलोचना और कुड़कुड़ाना दो बिलकुल भिन्न बातें हैं। झूठे उपदेशकों को कोई रुचि नहीं थी कि वे मसीहियों को पापी अभिलाषाओं में पड़ने से रोकें। मसीह की देह के निर्माण करने का उनका कोई उद्देश्य नहीं था। कुड़कुड़ाना एक विशेष मनःस्थिति के साथ होता है, एक दोषी ठहराने वाली असंतुष्ट मनोवृत्ति जो किसी भी बात से प्रसन्न नहीं हो सकती है। उनमें **अपनी अभिलाषाओं के अनुसार चलने** से बढ़कर कोई प्रेरणा नहीं थी। कलीसिया अस्वस्थ होती है जब उसमें ऐसे लोग होते हैं जो समस्याओं तथा आवश्यकताओं के समाधान के लिए तो कम प्रयास करते हैं, परन्तु जो सेवा कर रहे हैं उनकी आलोचना बहुतायत से करते हैं।

दूसरा, यहूदा ने कहा कि झूठे उपदेशक औरों को धोखा देते और **घमण्ड** की बातें बोलने के द्वारा अनुयायी बना लेते थे। घमण्डी लोग अपने विषय बहुत ऊँचा सोचते हैं। उनके पास प्रत्येक समस्या के लिए उत्तर होते हैं। व्यक्ति अपने विषय चालाकी से या निपुणता से डींग मार सकता है। घमण्डियों के पास औरों की सुनने और उनसे सीखने का कम ही समय होता है, तब भी नहीं जब औरों में प्रभु के भाई यहूदा और याकूब जैसे लोग हों। मसीहियों को कृपालु और आदर जैसे सद्गुणों के महत्व को सिखाया जाता है। झूठे उपदेशक इन्हीं विशेषताओं का, जिन्हें मसीही बहुमूल्य मानते हैं, अपने आप को बढाने के लिए उपयोग कर लेते हैं। शमौन टोहना करने वाले के समान (प्रेरितों 8:9), यहूदा के झूठे उपदेशक भी "अपने आप को कोई बड़ा पुरुष बनाते थे।" इस प्रकार से वे उन पर जो उनकी कही बात को बिना आलोचना या जांचे स्वीकार कर लेते थे, प्रभावी हो जाते थे।

तीसरा, झूठे उपदेशकों ने मसीही समाजों में **लाभ के लिये मुंह देखी बड़ाई** करने के द्वारा पकड़ बनाई। यहूदा ने कहा कि उसके पाठकों के लिए भला होगा यदि वे झूठे उपदेशकों से मिलने वाली बड़ाई पर कम ध्यान दें। इसके स्थान पर, उन्हें उन बातों पर ध्यान देना चाहिए जो वे सिखा रहे हैं।

अनुप्रयोग

जब स्थान देना सद्गुण नहीं होता है (आयतें 10-16)

मैं और मेरी पत्नी ग्रैत्ज़, ऑस्ट्रिया में दरवाज़े खटखटाने वाले एक अभियान में कॉलेज के विद्यार्थियों के समूह के साथ भाग ले रहे थे। कलीसिया में एक आरामदेह सहभागिता कक्ष था जहाँ जवान लोग दिन भर ईंटों पर चलने के पश्चात एकत्रित होते थे। एक बार दोपहर-बाद जब हम लौटे तो पाया कि वह सहभागिता कक्ष हमारे विद्यार्थियों तथा लगभग दर्जन भर अपरिचितों से भरा हुआ था। विद्यार्थियों ने हमारा परिचय अपने अतिथियों से कराया। वे मनोहर जवान लोग थे और उनका अगुवा एक मिलनसार लगभग पैंतीस वर्षीय व्यक्ति था।

हमारे जवानों का इन जवान उपदेशकों के साथ का अनुभव कम ही था। उनका मानना था कि उनके अतिथि उनके साथ यीशु में विश्वास को बाँटने आए थे। वे उन शपथों से अनभिज्ञ थे जो धर्मप्रचारक घरों से निकलने से पहले लेते थे। वे हमारे जवान लोगों से न तो सीखने के लिए आए थे और न ही उनसे बात करने के लिए आए थे। वे अन्दर आने के मार्ग बनाने और भीतर घुस आने के लिए आए थे। मेरी पत्नी को और मुझे परिस्थिति का समाधान कठिन लग रहा था। यदि हम अतिथियों से कड़ाई तथा गहराई से प्रश्न करते तो हमारे जवानों को लगता कि हम उनके मित्रों को बाहर निकालने का प्रयास कर रहे हैं। जवान और अनुभवहीनों के लिए झूठे उपदेशकों के सच्चे रंगों को देख पाना कठिन होता है।

यहूदा ने भी ऐसी ही स्थिति का सामना किया होगा। उसके अनेकों पाठक नए मसीही थे। उनके पास वह परिपक्वता और अनुभव नहीं था जो उनकी, जो

उनमें पैठ बना लेना चाहते थे, गुप्त बातों को समझ पाते। यहूदा भर्त्सना करने में कोमल नहीं था। हमें शब्द कठोर लगते हैं, परन्तु प्रभु के भाई के लिए यह समय हथौड़ा चलाने का था न कि झाड़ू चलाने का। उसे स्पष्ट होना था। हमें यह स्वीकार है कि नम्र होने के लिए भी समय होता है। व्यक्ति को सदा ही सत्य प्रेम सहित बोलना चाहिए (इफिसियों 4:15)। यह सब सत्य है, लेकिन यह भी सत्य है कि ऐसा समय भी आता है जब मसीही को उनसे निर्णायक विच्छेद कर लेना चाहिए जो मसीह के सिद्धांत के साथ समझौता कर रहे हैं। चिताने और डांटने के पश्चात, मसीहियों को यह स्पष्ट कर देना चाहिए कि भक्तिहीन व्यवहार को अनिश्चित काल के लिए सहन नहीं किया जाएगा।

समाप्ति नोट्स

[1]ई. अर्ल एलिस, *प्रौफेसी एण्ड हर्मेन्यूटीक इन अर्ली क्रिश्चियैनिटी* (ग्रैण्ड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक्स, 1993), 220-26. [2]प्रस्तावना और लघु टिप्पणियों के साथ 1 हनोक का एक अंग्रेज़ी अनुवाद जेम्स एच. चार्ल्सवर्थ, एड., *द ओल्ड टेस्टामेन्ट सूडएपीग्राफिया* (न्यू यॉर्क: डबलडे, 1983), 1:5-89 में देखा जा सकता है। फर्स्ट इनोक 6–19 में उत्पत्ति 6 के परमेश्वर के पुत्र विषय-वस्तु हैं। [3]रिचर्ड जे. बॉकहैम, *जूड, 2 पीटर,* वर्ड बिबलिकल कॉमेन्ट्री, वोल. 50 (वैको, टेक्स.: वर्ड बुक्स, 1983), 53. [4]विज़डम ऑफ सौलोमन 10:7 (NRSV). [5]विकटर पी. हैमिलटन ने ध्यान किया, "सदोम का स्थान निरूप अनिश्चित है।" उसने आगे कहा, "अभी तक कोई ऐसा निश्चित पुरातात्विक प्रमाण नहीं मिला है जो उत्तरी या दक्षिणी स्थिति की पुष्टि करे" (विकटर पी. हैमिलटन, *द बुक ऑफ जैनिसिस: चैपटर्स 18–50,* द न्यू इन्टरनैशनल कॉमेन्ट्री ऑन द ओल्ड टेस्टामेन्ट [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैन्स पबलिशिंग को., 1995], 31)। [6]यह दृष्टिकोण जे. एन. डी. केली, *ए कॉमेन्ट्री ऑन द एपिसल्स ऑफ पीटर एण्ड ऑफ जूड,* ब्लैक्स न्यू टेस्टामेन्ट कॉमेन्ट्रीस (लंडन: एडम एण्ड चार्ल्स बलैक, 1969), 258 का है। [7]पूर्वोक्त, 261. [8]तोबित 5:4; 6:11; 7:9; 8:2; 9:5; 11:1; 12:6. [9]टेस्टामेंट ऑफ मोसेस का एक अंग्रेज अनुवाद चार्ल्सवर्थ, 1:919-34 में मिल सकता है। [10]ऐसे व्याकरण के प्रयोग का तकनीकी नाम "anacoluthon" है।

[11]प्रमाण पर चर्चा के लिए, देखें बॉकहैम, 79-80. [12]यह 1 इनोक 1:9 का अनुवाद चार्ल्सवर्थ 1:13-14 से है। [13]1 इनोक 60:8.